रोज़ा-

सांसारिक व परलोक लाभ का प्रकाशन

अल्लाह तआ़ला कि इ़बादत व बन्दगी बन्दे का सत्य लक्ष्य है। इसे इस बात कि चिन्ता होनी चाहिए के मेरे जीवन के समय तथा दिन व रात अपने लक्ष्य व उद्देश्य को पूरा करने में गुज़रें, सारा जीवन अल्लाह तआ़ला कि इ़बादत व बन्दगी करने, इस के दरबार से नज़दीकी प्राप्त करने के लिए बिताता रहुँ।

अर्थात इस चिन्ता पर कर्म करने के लिए अल्लाह तआ़ला ने हमें अनेक अंदाज में इस के दरबार में उपस्थित होने तथा इ़बादत करने के सुन्हरे अवसर प्रदान फरमाए। कभी नमाज़ कि स्थिति में इ़बादत का ढंग प्रदान फरमाया।

कभी सत्य के मार्ग कि ओर क़दम बढ़ाते हुए कअ़बे के हज्ज करने का आदेश फरमाया तथा कभी अल्लाह के प्राणी कि सेवा करने के लिए ज़कात व सदखात कि स्थिति में इ़बादतों का केन्द्र प्रदान फरमाया।

इ़बादत के इन्हीं अनेक तरीक़ों में एक सर्वश्रेष्ठ तरीक़े "रोज़े" भी है जो इसलाम का चौथा स्तम्भ है। इस के शरई़ अर्थ प्रथम सवेरे के तुलू (निकलने) होने से सूर्य डूबने तक मोमिन बन्दे को खाने, पीने तथा संसर्ग व संभोग संबंध से रुके रहने के हैं।

रमज़ान कि बरकतें

मुबारक रमज़ान वह महीना है जिस में अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को कृपा व करुणा से इन्हें संबोधित करता है। अपने हबीब सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि रहमत का सदखा तथा खैरात से इन्हें संबंधित करता है तथा इन्हें रमज़ान मुबारक कि रहमतों, बरकतों तथा बख्शिश से अनुदत्त फरमाता है। जैसा के तिरमीज़ी शरीफ में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, इन्हों ने फरमाया, हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः जब रमज़ान मुबारक कि प्रथम रात आती है तो शैतान तथा सरकश जिन्न जकड़ दिए जाते हैं। नरक के दरवाज़ों को बन्द कर दिया जाता है तथा इन में कोई दरवाज़ा खोला नहीं जाता, तथा जन्नत के दरवाज़ों को खोल दिया जाता है एवं इन में कोई दरवाज़ा बन्द नहीं किया जाता, तथा एक समाचार देने वाला समाचार देता हैः ऐ भलाई के इच्छुक, (इस की ओर) ध्यान हो जा, तथा ऐ बुराई चाहने वाले, (पापों से) दूर हो जा, तथा अल्लाह तआ़ला की ओर से नरक वालों को स्वतंत्रता मिलती है तथा यह सिलसिला रमज़ान कि प्रत्येक रात होता है।

(जामे अल तिरमीज़ी, हदीस संख्याः 684)

रहमत वाले नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि प्रतिभा

रमज़ान मुबारक में अल्लाह तआ़ला दानशीलता तथा प्रदान का यह व्यवहार होता है के इस में इ़मान वालों को इ़बादतों का विशेष अवसर अनुदान किया जाता है। शरई़ सवाब व पुण्य में समावेशन किया जाता है।

शैतानों को जकड दिया जाता है, ताकि वह अल्लाह के बन्दों को ना भडकाएं, इन्हें इबादतों से ना बहका सकें।

अल्लाह सुभान तआला अपने बन्दों को आभूषम करते हुए रमज़ान के महीने कि प्रत्येक रात पापी बन्दों को नरक से आज़ाद करता है। रमज़ान का महीना --- का मामला रहमत वाले नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का भी हुआ करता है। आप भी अपनी समुदाय को संबोधित करते तथा अपनी रहमत का सदखा प्रदान फरमाते हैं। जैसा के रिवायत हैः-

भाषांतरः- हज़रत अबदुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से वर्णित है, आप ने फरमायाः जब रमज़ान के महीना शुरु होता तो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हर कैदी को आज़ाद कर देते तथा हर मांगने वाले को प्रदान करते हैं।

(शुअबुल इमान, हदीस संख्याः 3475, मजमअ़ उज़ ज़वाईद, हदीस संख्याः 4838, कंज़ुल उ़म्माल, हदीस संख्याः 18060)

रोज़ो कि अपरिहार्यता

इसी बरकतों वाले महीने में अल्लाह तआला ने बन्दों के लिए *रोज़े* कि स्थिति में इबादत करने का एक सुनहरा अवसर दान करता है। अर्थात प्रवासन के दूसरे वर्ष शअ़बान के महीने में रोज़े कि अपरिहार्यता कि घोषणा फरमाई तथा रमज़ान के महीने कि विशेषता को वर्णन करते हुए अनुदेश फरमायाः-

भाषांतरः- रमज़ान वह महीना है, जिस में क़ुरान प्रकट किया गया, इस स्थिति में के वह लोगों के लिए मार्गदर्शन है तथा इस में सत्य व असत्य में तमीज करने वाली रोशन दलीलें (प्रमाणों में) हैं। तुम में जो कोई इस महीने को पाय वह इस के रोज़े रखे।

(सुरह अल बक़रहः 02:185)

रोज़ा एक ऐसी इ़बादत है, जो अगली उ़म्मतों व समुदाय पर भी फर्ज़ थी, इन्हें भी अल्लाह तआ़ला ने रोज़े का प्रबंध करने का आदेश दिया था। वह ऐसी विशाल इ़बादत है, जिस कि बरकत से मानव धर्मनिष्ठा व तहारत (पवित्रता) का पाबंद हो जाता है।

अर्थात अल्लाह तआ़ला ने हमारे लिए भी रोज़े को धर्मनिष्ठा तथा परहेज़गारी प्राप्त करने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम बनाया। जैसा के अभी जो आयत आई गई इस में अल्लाह तआ़ला आदेश फरमाता हैः-

भाषांतरः- ऐ इ़मान वालो! तुम पर रोज़े अनिवार्य किए गए, जिस प्रकार तुम से पहले के लोगों पर किए गए थे, ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ।

(सुरह अल बक़रहः 02:185)

रोज़ेदार अल्लाह के लक्षण का प्रकाश तथा सुन्नत नबवी का अनुगामी

रोज़ा एक ऐसा फर्ज़ है, वह अल्लाह कि एक ऐसी इ़बादत है के मोमिन बन्दा जब तक सरवर कौनैन सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि सुन्नत पर अ़मल ना करें इसे समापन नहीं कर सकता।

अल्लाह तआ़ला ने रोज़ेदार के अधिकार में ऐसा मामला फरमाया के वह अल्लाह कि विशाल इ़बादत रोज़े का प्रारम्भ करना चाहे तो वह सहरी खाय बिना रोज़ा शुरु नहीं कर सकता।

तथा यदि सहरी खाय बिना रोज़ा रख भी ले तो वह सुन्नत के विरुद्ध कर्म का अपराधी होगा। इस लिए के हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने सहरी खाने से संबंधित सचेत फरमा दिया तथा हम गुलामों को इस कि तौबा दिलाई तथा यह आदेश फरमायाः

भाषांतरः- हज़रत अबदुल अज़ीज़ बिन सुहैब रहमतुल्लाहि अलै फरमाते हैं, मैं ने हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से सुना, इन्होंने फरमाया, हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः सहरी खाया करो, क्यों के सहरी में बरकत है।

(सहीह अल बुक़ारी, हदीस संख्याः 1923)

इसी प्रकार रोज़े के अंत पर इफतार करना, यह भी रहमत वाले पैगम्बर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि धन्य सुन्नत है। अतः अल्लाह तआ़ला ने रोज़े को हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि 2 सुन्नतों के बीच रख दिया।

अल्लाह तआ़ला कि इस इ़बादत को अपनाकर रोज़ेदार जहाँ अल्लाह के लक्षण का प्रकटीकरण हो जाता है। वहीं वह सुन्नत नबवी का पैकर व अनुगामी (अनुयायी) भी बन जाता है।

क्यों के भोजन खाना हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि सुन्नत है तथा अल्लाह कि जात खाने, पीने से पवित्र है। इस बुनियाद पर बन्दा जब रोज़ा रखता है तो वह अल्लाह के तजलियात तथा अनवार नबवी से अपने ज़ाहिर व बातिन को रोशन व दीप्तिमान कर लेता है।

रोज़ेदार के तत्व में विशेषाधिकार

संसार व परलोक में रोज़े के असंख्या लाभ हैं। रोज़ेदार के अधिकार में अल्लाह तआ़ला ने संसार व परलोक में असंख्या व अगण्य बरकतें व आशीर्वाद रखा हैं। रोज़ा खुदाए तआ़ला कि वह इ़बादत है के जिस कि बरकतें अन्य इ़बादतों में तथा इन के पुण्य में नहीम पाई जातीं।

मोमिन बन्दे को नेकी करने के कारण से पुण्य तो अवश्य दिया जाता है परन्तु वह पुण्य व सवाब, रोज़ा एवं इस के सवाब व पुण्य के सक्षम नहीं हो सकता, हदीस शरीफ में आता हैः-

भाषांतरः- हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, इन्हों ने फरमाया, हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः निस्संदेह तुम्हारा पालनहार फरमाता हैः हर नेकी का प्रतिफल 10 गुना से 700 गुना तक दिया जाता है तथा रोज़ा (केवल) मेरे लिए है तथा मैं ही इस का प्रतिफल दान करता हुँ, रोज़ा नरक के लिए ढाल व रक्षक है तथा रोज़ेदार के मुंह कि बू अल्लाह तआ़ला के नज़दीक मुश्क से अधिक सुगन्ध है। तथा यदि कोई नादां तुम में किसी रोज़ेदार से --- हरकत करें तो इसे चाहिए के वह कहेः मैं रोज़ेदार हुँ।

(जामे अल तिरमीज़ी, हदीस संख्याः 769)

हदीस शरीफ में वर्णन कथन जिस का अनुवाद यह है के मैं खुद ही रोज़े का बदला हो जाता हुँ।

इस हदीस शरीफ से यह बात उजागर होती है के अल्लाह तआ़ला ने प्रत्येक इ़बादत का प्रतिफल तथा इस के हर आज्ञापलन का प्रतिलाभ सवाब कि शकल में निर्धारित किया है। परन्तु रोज़ा अल्लाह तआ़ला कि एक ऐसी इ़बादत है, जिस का प्रतिफल खुद अल्लाह तआ़ला हो जाता है तथा रोज़ेदार को अपने दीदार पर अनवार से आभूषण कर देता है।

रोज़ा- पृथकता कर्म

रोज़ा एक ऐसी इ़बादत है जिस में विशेष रूप पर दिखावा (रियाकारी) का कोई संदेह नहीं, इस में दिखावे का कोई दखल नहीं, अल्लाह तआ़ला ने रोज़ेदार के लिए विशेष संबोधन का जो वचन किया, इसी से संबंधित विस्तार वर्णन करते हुए शारह सहीह बुक़ारी अ़ल्लामा हाफिज़ इ़ब्न हज्र असखलानी रहमतुल्लाहि अलैह लिखते हैः-

भाषांतरः- अल्लाह तआ़ला ही सर्वश्रेष्ठ जानता है, वासतव में इस ने रोज़े को इस लिए विशिष्ठ रखा, क्यों के रोज़ा मानव के कर्म से प्रकट नहीं होता, इस लिए के वह दिल ही में रहस्य चीज़ है तथा इस बात कि प्रशंसा सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के आदेश से होती है के रोज़े में दिखावा नहीं है... इ़माम ज़हरी रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमायाः बात यह है के कर्म हरकतों के साथ हुआ करते हैं, परन्तु रोज़ा केवल नियत पर निर्भर होता है तथा नियत लोगों से रहस्य रहती है।

(फतहुल बारी शरह सहीह बुक़ारी, किताबुल सौम, बाब फज़्लुल सौम)

अल्लाह कि प्रसन्नता की बरकत

रोज़ेदार अपने मौला को सन्तष्ट करने के लिए सूर्य कि हरारत को सहन करता है। किन्तु पानी का एक बूँद अपने हलख के नीचे जाने नहीं देता, भूक कि अधिकता पर भी धीरज व सहनशीलता रखता है। किन्तु खाने का एक दाना अपनी पेट में जाने नहीं देता तथा रोज़ेदार के इस कर्म का किसी को परिज्ञान नहीं होता ऐसे समय यदि वह कुछ खाले तथा पी ले तो इस से कोई पूछने वाला नहीं होता, तब भी वह कोई चीज़ खाने पीने कि हिम्मत नहीं करता, क्यों के इस के दिल व हृदय में अल्लाह तआ़ला का खौफ व भय होता है।

केवल वह अल्लाह तआ़ला कि सन्तुष्ठी तथा प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए इन ज़ाहिरी परिश्रमों को सहन करता है, नफसानी इच्छा से परहेज़ करता है, पापों से दूर रहता है, शैतान के वसवसों से बचने कि कोशिश करता है। यही कारण है के हदीस शरीफ में रोज़ो को नरक कि आग से बचने का ढाल व रक्षक कहा गया।

क्यों को रोज़ेदार जब अल्लाह तआ़ला तथा इसके हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि आज्ञापालन में विरक्तता व एकांतता के साथ हमेशा व्यस्त हो जाता है तथा शरीअ़त के विरुद्ध होने से वह अपने दामन को बजालाता है तो *रोज़ा* इस के अधिकार में नरक के लिए ढाल बन जाए तथा इसे रोज़े के कारण नरक से छुठकारा भाग्य नसीब हो जाए।

रोज़ेदार के लिए रहमतों कि उपहारें

जब रोज़ेदार अपने मौला का खुर्ब प्राप्त करने के लिए धर्मनिष्ठा के साथ रोज़ा समापन करने के लिए समस्याएं सहन करता है, नफसानी इच्छा को अवहेलना कर देता है तो अल्लाह तआ़ला ने रोज़ेदार बन्दे को अपनी प्रसन्नता से आभूषण करने तथा इसे अपनी विशेष रहमतों से संबोधित का वचन देता है।

जिस कि सूचना हमें सत्य पैगम्बर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने दी, अर्थात एक अवसर पर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को अनुदेश करते हुए आदेश करते हैः-

भाषांतरः- हज़रत सआ़द बिन ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफैल रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, इन्हों ने फरमाया, मैं ने हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से सुना, आप ने हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु कि ओर ध्यान कर के आदेश फरमायाः ऐ उसामा! तुम जन्नत के द्वार पर निश्चिंत --- रहो तथा इस के अतिरिक्त रास्ते पर चलने से बचे रहो। तो इन्हों ने निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम! इस रास्ते पर तेज़ी से पहुंचाने वाली कौनसी चीज़ है? पैगम्बर इसलाम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः गर्मियों में प्यासा रहना तथा सांसारिक इच्छा से नफ्स को रोकना। ऐ उसामा, तुम रोज़ा रखा करो। क्यों के वह अल्लाह तआ़ला से नज़दीकी प्रदान करता है तथा अल्लाह तआ़ला के नज़दीक रोज़ेदार के मुंह कि बू तथा खाने पीने को अल्लाह कि सन्तुष्टी के लिए छोडने से श्रेष्ठतर कोई प्रिय चीज़ नहीं, यदि तुम ऐसा कर सकते हो के तुम्हारे देहान्त के

समय तुम्हारा पेट भूका तथा जिगर प्यासा हो, तो तुम ऐसा करो। जिस के कारण तुम परलोक में बुलंद स्थान पा लोगे तथा पैगम्बरों कि सेवा में रहोगे, तथा तुम्हारे इन कि सेवा में उपस्थित होने के कारण से वह प्रसन्न होंगे तथा अल्लाह तआ़ला तुम पर रहमतें प्रकट करेगा।

(तारीक़ दमिश्ख, उसामा बिन ज़ैद बिन हारिसा)

रोज़ा - अ़मली व शिष्ठाचार कि शिक्षा का संरक्षण

रोज़े का सम्पूर्ण लाभ व फायदों में यह भी है के इस में रोज़ेदार कि अ़मली व शिष्ठा कि शिक्षा होती है। वह वरदानों कि इज्जत करने वाला तथा अल्लाह के प्रदान पर धन्यवाद करने वाला बनता है।

समस्या व कठिनाई पर सहनशीलता करने का आदी हो जाता है तथा खुद खाने पीने से रुक रहने के कारण से ग़रीब व नादार तथा भूके रहने वाले सदस्यों से संबंधित इस के दिल में दुःख कि भावना पैदा होती है।

रोज़े स्वस्थ्य कि अनुकूलता का कारण

विज्ञानवेत्ता व चिकित्सक अनुसार से भी रोज़े के कई लाभ हैं, विशेष रूप से रोज़ा रखने से मनुष्य कि स्वस्थ्य अवशेष व स्थापित रहत है। चिकित्सक विशेषज्ञ का वर्णन है के पेट को लम्बे समय तक भोजन से खाली रखना कई शारीरिक रोग का इ़लाज है।

भूक के कारण से कई पेट के रोग --- हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त रोज़ा मनुष्य को भविष्य में होने वाले कई रोगों का प्रोग --- हो जाते हैं। इसके

अतिरिक्त रोज़ा मनुष्य को भविष्य में होने वाले कई रोगों का प्रभावित इलाज होने का माध्यम है।

रक्तदाब (ब्लड प्रेशर), परिपाक, शुगर तथा इस जैसे कई पीड़ा शारीरिक कि रोक थाम के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

रोज़ा- जन्नत में प्रवेश का सर्वश्रेष्ठ माध्यम

इन गुणों व लाभ के पेश नज़र रोज़े को केवल रमज़ान कि सीमा तक परीमित नहीं किया गया, बल्कि जिस प्रकार फर्ज़ नमाज़ों के अतिरिक्त नफ्ल नमाज़ें भी संपादन की जाती हैं, सदखा वाजिब तथा ज़कात के अतिरिक्त नफ्ल सदखा, खैरात व दान दिए जाते हैं।

इसी प्रकार रसूल करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने नफ्ल रोज़ों का भी अनुदेश दिलाया एवं इसे जन्नत में प्रवेश होने का सर्वउत्तम माध्यम घोषित किया। जैसा के मुसनद इ़माम अहमद में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत अबु उ़मामा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, इन्हों ने फरमायाः मैं हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि सेवा में उपस्थित हुआ तथा विनती कियाः मुझे ऐसे कर्म का आदेश फरमाएं, जो मुझे जन्नत में प्रवेश करें। सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः तुम रोज़े का प्रबंध करो। क्यों के कोई कर्म इस के बराबर नहीं, मैं हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि सेवा में दोबारा उपस्थित हुआ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) ने आदेश फरमायाः तुम रोज़े का प्रबंध करो।

(मुसनद अल इ़माम अहमद, हदीस संख्याः 22805)

अल्लाह तआ़ला कि यह अनुमति व अनुदान अपने निपुण व प्रवीण, रोज़ेदार इ़बादत गुज़ार तथा परहेज़गार बन्दों के लिए है। जो अपने मौला कि आज्ञापालन करते हैं। इस से भय करते हैं तथा हमेशां इन पर अल्लाह तआ़ला का भय तारी रहता है।

एकांतता व पृथकता के साथ वह अल्लाह तआ़ला कि इ़बादत करते हैं। इसी नीव पर अल्लाह तआ़ला इन्हें अपनी कृपा व करुणा में ले लेता है। इन हस्तियों से अतिरिक्त जो बन्दे अल्लाह तआ़ला कि अवज्ञा व आज्ञालंघन करते हैं।

इस की औऱ इस के हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि आज्ञा से दूर रहते हैं, वह इ़बादत तो अवश्य करते हैं, किन्तु इस में एकांतता नहीं होता, वह रोज़ा तो रखते हैं, परन्तु पापों से नहीं बचते तो ऐसे सदस्य कि इ़बादत अल्लाह के दरबार में स्वीकृत का सम्मान प्राप्त नहीं करता। जैसा के सहीह बुक़ारी शरीफ में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, इन्हों ने फरमायाः हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः जो व्यक्ति (रोज़े में) झूठ बात (और दुष्ट कार्य) को नहीं छोडता तो अल्लाह तआ़ला को कोई परवा नहीं के वह खाना पीना छोड दे।

(सहीह बुक़ारी, हदीस संख्याः 1903)

हमारी ज़िम्मेदारी है के हम इस पावन महीने का आदर व सम्मान करें। रोज़ों तथा तरावीह का प्रबंध करें।

बिना किसी तकलीफ जिसे शरीअ़त ने निर्धारित किया रोज़ा ना छोडें तथा विशेष रूप से रोज़े कि स्थिति में नाजाइज़ व हराम कामों के अतिरिक्त निषिद्ध व मकरुहात से भी बचते रहें।

अंत में दुआ है के अल्लाह तआ़ला हमें रमज़ान मुबारक कि रहमतों, बरकतों तथा वरदानों से धनी व मालामाल फरमाएं। अहकाम शरीअ़त पर पाबंदी करने तथा बुराईयों से दूर रहने कि मार्गदर्शन प्रदान करे।

आमान....